२. तेनालीराम

एक राजा दूसरे राजा के विद्वानों की परीक्षा लेने के लिए अपने विद्वानों को उनके दरबार में भेजते थे। एक बार राजा कृष्णदेवराय के दरबार में एक विद्वान ने बहुत से प्रश्न पूछे। अंत में

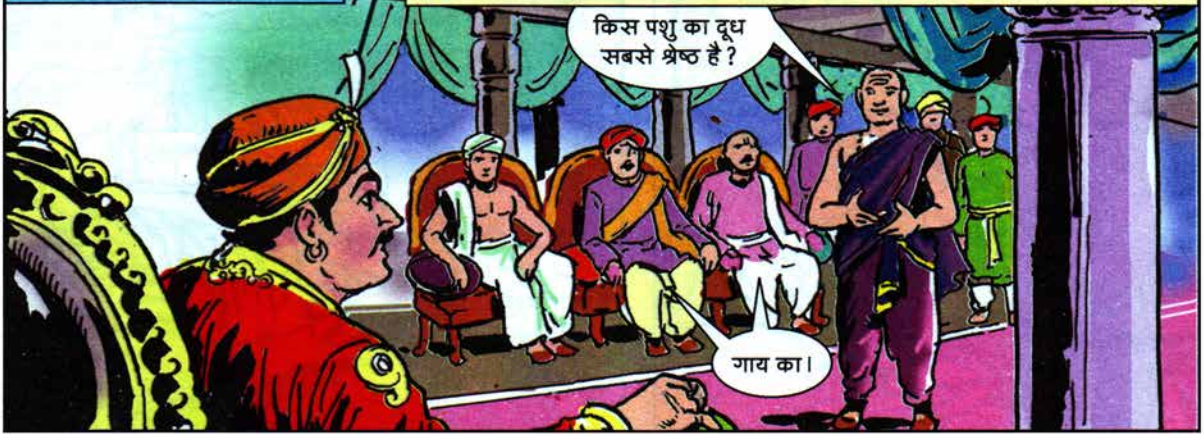

तेनालीराम खड़े होते हैं।
बकरी का।
तेनालीराम! होश में तो हो?
शायद आपने मेरा प्रश्न ठीक से नहीं सुना?
हा..हा..हा!!

क्षमा करें महोदय। आपने पशु के दूध के बारे में पूछा, इसलिए मैंने बकरी कहा। गाय पशु नहीं वह तो माँ है।
उत्तम!!
बहुत सुंदर!
वाह!
वाह! केवल बाहरी ज्ञान प्राप्त विद्वान ऐसा उत्तर नहीं दे सकते, भीतरी ज्ञान अर्थात् प्रज्ञासंपन्न व्यक्ति ही इतना सुंदर उत्तर दे सकते हैं। जहाँ प्रज्ञावान पुरुष होते हैं, उन्हें कोई नहीं जीत सकता।

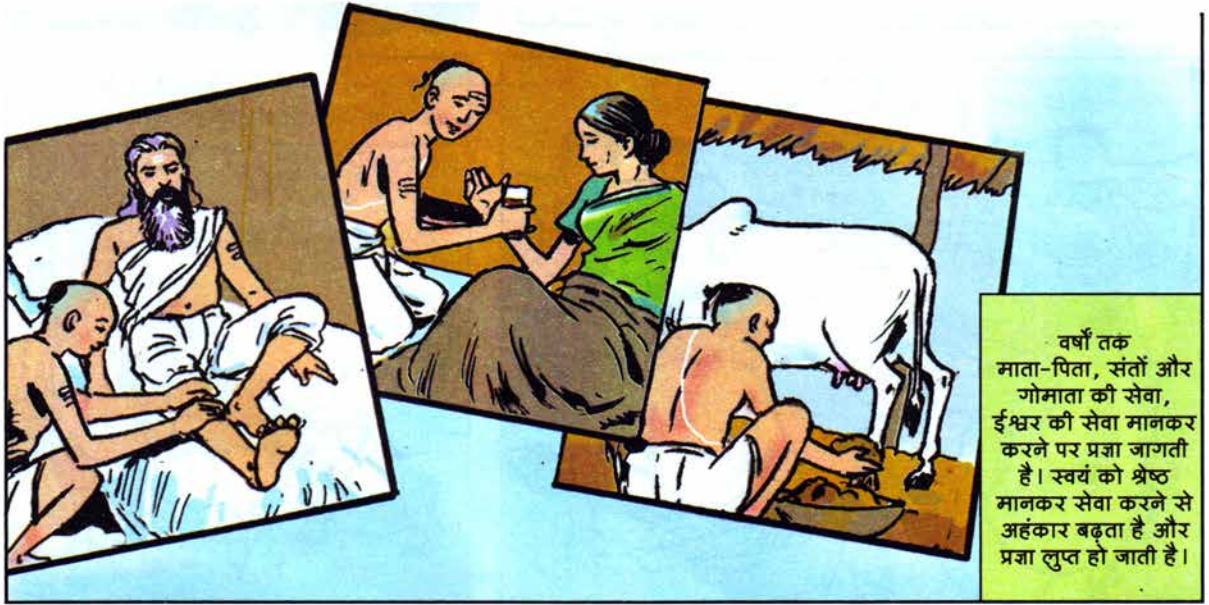
वर्षों तक
माता-पिता, संतों और
गोमाता की सेवा,
ईश्वर की सेवा मानकर
करने पर प्रज्ञा जागती
है। स्वयं को श्रेष्ठ
मानकर सेवा करने से
अहंकार बढ़ता है और
प्रज्ञा लुप्त हो जाती है।